श्री घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग

दर्शन

शिवालय, शिवाड़ (राजस्थान)

श्री घुश्मेश्वर शिवालय, शिवाड़

प्रेमप्रकाश शर्मा
अध्यक्ष
94142-87300
99298-59433

रतनलाल आजाद
संरक्षक
9414030823

अवधेश पाराशर
पं. पुरूषोत्तम शर्मा
विशिष्ठ प्रभारी - प्रचार-प्रसार

घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग की प्राकट्य की कथा

(शिव पुराण कोटि रूद्र संहिता अध्याय 32-33)

"दक्षिण दिशा में श्वेत धवल पाषाण का देवगिरि पर्वत है उसके पास सुधर्मा नामक धर्मपरायण भारद्वाज गौत्रीय ब्राह्मण रहते थे उनके सुदेहा नामक पत्नी थी। संतान सुख से वंचित रहने एंव पड़ौसियों के व्यंग बाण सुनने से व्यथित होकर पति का वंश चलाने हेतु सुदेहा ने अपनी छोटी बहिन घुश्मा का विवाह सुधर्मा के साथ करवाया। घुश्मा, भगवान शंकर की अनन्य भक्त थी वह प्रतिदिन एक सौ एक पार्थिव शिवलिंग बनाकर पूजन-अर्चन करती थी एंव उनका विसर्जन समीप स्थित सरोवर में कर देती थी।आशुतोष की कृपा से घुश्मा ने एक पुत्र रत्न को जन्म दिया तो सुदेहा के हर्ष की सीमा नहीं रही, परन्तु बहिन के पुत्र के बड़े होने के साथ-साथ उसे लगा कि सुधर्मा का उसके प्रति आकर्षण एंव प्रेम कम होता जा रहा है।पुत्र के विवाह के उपरान्त सौतिया डाह के अतिरेक के कारण उसने घुश्मा के पुत्र की हत्या कर दी एंव शव को तालाब में फैंक दिया। प्रातःकाल जब घुश्मा की पुत्रवधु ने अपने पति की शैय्या को रक्त रंजित पाया तो विलाप करती हुई अपनी दोनों सासों को सूचना दी। विमाता सुदेहा जोर-जोर से चीत्कार कर रोने लगी जबकि घुश्मा जो शिव पूजा में लीन थी, निर्विकार भाव से अपने आराध्य को श्रद्धा सुमन समर्पण करती रही। घर में कोहराम व्याप्त था सुदेहा, सुधर्मा व पुत्रवधु की मार्मिक चीत्कारें, विलाप एंव पुत्र की रक्त रंजित शैय्या भी घुश्मा के भक्तिरत मन में विकार उत्पन्न नहीं कर सकी।घुश्मा ने सदैव की भांति पार्थिव शिवलिंगों का विसर्जन सरोवर में कर आशुतोष शंकर की स्तुति की तो उसे पीछे से माँ-माँकी आवाज सुनाई दी जो उसके प्रिस पुत्र की थी जिसे मृत मानकर पूरा परिवार आर्तनाद कर रहा था। विस्मित घुश्मा ने उसे शिव इच्छा-शिव लीला मानकर भोले शंकर का स्मरण किया तब आकाशवाणी हुई कि हे घुश्मा तेरी सौत सुदेहा दुष्टा है उसने तेरे पुत्र को मारा है। मैं उसका अभी विनाश करता हूँ। परन्तु घुश्मा ने स्तुति की "प्रभो मेरी बहिन को न मारें, उसकी बुद्धि निर्मल कर दें। क्योंकि आपके दर्शन मात्र से पातक नहीं ठहरता, इस समय आपका दर्शन करके उसके पाप भस्म हो जायें" प्रसन्न होकर भगवान भूतनाथ प्रकट हुए तथा वरदान दिया कि मैं आज से तुम्हारे ही नाम से घुश्मेश्वर रूप में इस स्थान पर वास करूंगा तथा यह सरोवर शिवलिंगों का आलय हो जाये।"

द्वादशवें ज्योतिर्लिंग श्री घुश्मेश्वर के राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिलान्तर्गत ग्राम शिवालय (शिवाड़) में ही विराजमान होने के प्रमाण :-

शिवालय नामक स्थान में प्राकट्य

शिव पुराण कोटि रूद्र संहिता के अध्याय 32 से 33 के अनुसार घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग शिवालय नामक स्थान पर होना चाहिये।

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्।उज्जयिन्यां महाकालंओंकारं ममलेश्वरम्।।
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशंकरम्।वाराणस्यां च विश्वेशं त्रयम्बकं गौतमी तटे।।
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारूकावने।सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं तु शिवालये।

पुरातनकाल में इस स्थान का नाम शिवालय था जो अपभ्रंश होता हुआ, शिवाल से शिवाड़ नाम से जाना जाता है।

दक्षिण में देवगिरि पर्वत

शिवपुराण कोटि रूद्र संहिता अध्याय 33 के अनुसार
घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के दक्षिण में देवत्व गुणों वाला देवगिरि पर्वत है।
दक्षिणस्यां दिशि श्रेष्ठो गिरिर्देवेति संज्ञकः महाशोभान्वितो नित्यं राजते ऽद्भुत दर्शनः
तस्यैव निकटः ऐको भारद्वाज कुलोद्भवः सुधर्मा नाम विप्रश्च न्यवसद् ब्रह्मवित्तमः

शिवालय (शिवाड़) स्थित ज्योतिर्लिंग मंदिर के दक्षिण में भी तीन श्रृंगों वाला धवल पाषाणों का प्राचीन पर्वत है जिसे देवगिरि नाम से जाना जाता है। यह महाशिवरात्रि पर एक पल के लिए सुवर्णमय हो जाता है जिसकी पुष्टि बणजारे की कथा में होती है जिसने देवगिरि से मिले स्वर्ण प्रसाद से ज्योतिर्लिंग की प्राचीरें एवं ऋणमुक्तेश्वर मंदिर का निर्माण प्राचीनकाल में करवाया।

उत्तर में शिवालय सरोवर

शिवपुराण कोटि रूद्र संहिता अध्याय 33 के अनुसार घुश्मेश्वर प्रादुर्भाव कथा में भगवान शिव ने घुश्मा को निम्न वरदान दिया।

तदोवाच शिवस्तत्र सुप्रसन्नो महेश्वरः, स्थास्येत्र तव नाम्नाहं घुश्मेशाख्यः सुखप्रदः।44।
घुश्मेशाख्यं सुप्रसिद्धं में जायतां शुभः, इदं सरस्तु लिंगानामालयं जयतां सदा।45।
तास्माच्छिवालयं नाम प्रसिद्धं भुवनत्रये, सर्वकामप्रदं हयेत दर्शनात्स्यात्सदासरः।46।

तब शिव ने प्रसन्न होकर कहा है घुश्मे मैं तुम्हारे नाम से घुश्मेश्वर कहलाता हुआ सहा यहाँ निवास करूंगा और सबके लिए सुखदायक होउंगा।44। मेरा शुभ ज्योतिर्लिंग घुश्मेश्वर नाम से प्रसिद्ध हो। यह सरोवर शिवलिगों का आलय हो जाये।45। तथा उसकी तीनों लोकों में शिवालय के नाम से प्रसिद्धि हो। यह सरोवर सदा दर्शन मात्र से ही अभीष्ठों का फल देने वाला हो।46।

1837 ई. (वि.सं. 1895) में ग्राम शिवाड़ स्थित सरोवर की खुदाई करवाने पर दो हजार शिवलिंग मिले जो इसके शिवलिंगों का आलय होने की पुष्टि करते हैं तथा इसके शिवालय नाम को सार्थक करते हैं। मंदिर के परम्परागत पाराशर ब्राह्मण पुजारियों का गोत्र शिवाड़िया है।

शिवालय के क्षेत्र के चार द्वार

प्राचीन ग्रंथ श्री घुश्मेश्वर महात्म के अनुसार प्राचीनकाल में ज्योतिर्लिंग क्षेत्र शिवालय में एक योजन विस्तार में चारों दिशाओं में चार द्वार थे जिनका नाम पूर्व में सर्वसर्पद्वार, पश्चिम में नाट्यशाला द्वार तथा उत्तर में वृषभ द्वार व दक्षिण में में ईश्वरद्वार था तथा पश्चिामोत्तर में सुरसर सरोवर था।

दूरतो योजनेकंच तावता विस्तरेण वै, द्वाराणि सन्ति चत्वारि देवस्य परितोधुना।8।
पूर्वस्य द्वारस्य सर्वा वै सर्पमपि वदन्ति हि, अस्मिन्द्वारै वै सर्पाः श्रृंगारं भूषयन्ति च।9।
रक्षको भैरवश्चास्ते प्रत्यहं दर्शको विभोः, चोत्तरे वृषभो द्वारं यत्र नन्दी निवासते।10।
पश्चिमेद्वारकं नाट्यं नाट्यशालाख्य द्वारकं, तेऽपि नृत्यन्ति वै गणाः श्री घुश्मेश्वर सन्निधौ।11।
ईश्वरे द्वारके याम्ये तत्र लिंगश्च ईश्वरः, पश्चिमोत्तर देवस्य सुरसराख्य सागरः।12।

वर्तमान में ग्राम शिवाड़ स्थित ज्योतिर्लिंग क्षेत्र के चारों और उपरोक्त चारों द्वारों के प्रतीक चार गांव है जो सारसोप (सर्पद्वार), नटवाड़ा (नाट्यशाला द्वार) बहड़ (वृषभ/बैल द्वार), ईसरदा (ईश्वर द्वार) के नाम से जाने जाते है। पश्चिमोत्तर में सिरस गांव सुरसर सरोवर के स्थान पर बसा हुआ है।

वाशिष्ठी नदी के किनारे बिल्वपत्रों एवं मंदार के वन

घुश्मेश्वर महात्म्य ग्रंथ के अनुसार ज्योतिर्लिंग के शिवालय क्षेत्र के पास वाशिष्ठी नदी बहती थी। जिसके किनारे मंदारवन (आकड़ों का वन) तथा बिल्व पत्रों के वन थे जिनसे घुश्मेश्वर की नित्य पूजा की जाती थी।

वाशिष्ठी शुभदा गंगा आप्लावयति सांप्रतम्, कूले सन्ति हि पुष्पाणि मंदारस्य शुभानि च।3।
पुष्पैरेवं महादेवं पूजयन्ति सदा शिवम्, बिल्वानि यानि वोद्याने सम्भूतानि महान्ति च।4।

ग्राम शिवाड़ स्थित ज्योतिर्लिंग क्षेत्र के पास बनास नदी बहती है जो पूर्वकाल की वाशिष्ठी नदी ही है तथा इसके किनारे बिल्व पत्रों का वन आज भी विरल रूप में स्थित है। मंदारवन के स्थान पर मंडावर ग्राम है जहां आंकड़े (मंदार) बहुतायत से उत्पन्न होते हैं।

योगीजनों को भी दुर्लभ शिवलिंग

घुश्मेश्वर महात्म्य ग्रंथ के अनुसार ज्योतिर्लिंग का शिवलिंग अव्यक्त (अदृश्य) रहता है।

शिवालये याम्ये तीरे सर्वदेव तपः क्षितौ, ज्योतिरूपो मुने साक्षात् घुश्मेश्वर विराजते।7।
अव्यक्तं प्रमं लिंग प्रकाशते हहर्निशम्, दीपशिखा कृतिनश्च योगिभिरैव दृश्यते।8।

शिवाड़ स्थित घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग अधिकांश समय जलमग्न रहने के कारण अदृश्य ही रहता है।

स्वयंभू शिवलिंग

ज्योतिर्लिंग स्वयंभू है अतः ये किसी शिल्पी द्वारा तैयार नहीं होने चाहिये। शिवाड़ स्थित ज्योतिर्लिंग किसी शिल्पी की रचना नहीं है वह स्वयं उत्पन्न है अतः स्वयंभू है।

ज्योतिर्लिंग के पास देवगिरि पर्वत में शक्ति पीठ

शिवाड़स्थ ज्योतिर्लिंग के दक्षिण में स्थित देवगिरि पर्वत में ऊँचाई पर एक शक्तिपीठ स्थापित है शालिवाहन संवत् 1493 (1671 ई.) में मूहुर्तमार्तण्ड नामक प्रसिद्ध ज्योतिषग्रंथ के रचनाकार पं. नारायण ने ग्रंथ के संक्रान्ति प्रकरण के अंत में अपने वंश, जन्म स्थान का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :-

त्रयं केन्द्र 1493 प्रमितंवर्षे, शालिवाहन जन्मतः कृतस्तपसि मार्तण्डोयमलं जगतूद्गतः श्रीमतकौशिक पावनो हरिपद द्वन्दार्पितात्माहरिस्तज्जोनंत इलासुरार्चित गुणो नारारयणस्तत्सुतः ख्यातं देवगिरे शिवालय मुदक्तस्मादुदक्टापरः ग्राम स्तदवसतिर्मुहुर्तभवनं मार्तण्डमत्राकरोत्।

भावार्थ : जिन्होंने विष्णु के चरणों में अपनी आत्मा को अर्पित किया है ऐसे विष्णु चरणों में पवित्र कौशिकवंश में हुए द्विजश्रेष्ठ श्री हरि, जिनसे शम, दम, तप अध्ययन, जितेन्द्रियता यज्ञकर्तृता उदारता आदि गुणों से अलंकृत ब्राह्मणों से पूजित अनंत नामक द्विजश्रेष्ठ उत्पन्न हुए, उनके पुत्र नारायण ने मुहुर्तों के भण्डार इस मुहुर्तमार्तण्ड ग्रंथ कर रचना की जो पुराण प्रसिद्ध देवगिरि पर्वत के पास उत्तर में स्थित शिवालय सरोवर के उत्तर की ओर स्थित ग्राम टापर में रहता है।

ग्राम टापर शिवाड़ स्थित ज्यातिर्लिंग के उत्तर में यथास्थान स्थित है तथा अनेक महान विभूतियों की जन्मभूमि एवं कर्म भूमि रहा है।

गणक तरंगिणि ग्रंथ

सन्1933 में ज्योतिष प्रकाश प्रेस, विश्वेश्वर गंज वाराणसी से पद्माकार द्विवेदी द्वारा प्रकाशित तथा सुधाकर द्विवेदी द्वारा लिखित ग्रंथ तरंगिणि में भी मुहूर्तमार्तण्ड की टीका के बारे में निम्न प्रकार लिखा गया है।

अयं अनंतनंदनो देवगिरेर्नाति दूर प्रदेशे सौम्यदिशि घुसृमेश नाम प्रसिद्ध महादेव मन्दिरादिक उदक टापर ग्राम निवासी त्रिनिधि समुद्र शशांकमिते 1494 शाके तट्टीकां च मार्तण्डवल्लभा ख्यामकार्षीत।

उपरोक्त से भी मुहूर्तमार्तण्ड ग्रंथ की टीका शिवाड़ स्थित ज्योतिर्लिंग के उत्तर में स्थित ग्राम टापर में 1494 शक से किये जाने की पुष्टि करता है।

ऐतिहासिकता

वि. स. 1081(ईस्वी 1023) में महमूद गजनवी के सिपाहासालार सालार मसूद द्वारा इस स्थान का विध्वंस किया गया। उस क्रूर, हृदय विदारक घटना की स्मृति इस मंदिर के प्रांगण में मिले प्रस्तर खंड, मूर्तियों तथा स्मारकों को देखकर आंखे नम हो जाती है। उपरोक्त अवशेष सातवीं शताब्दी के आस-पास निर्मित मन्दिरों की शैली के है इन पर भी युगल देव मूर्तियां उत्कीर्ण है। उपरोक्त पत्थर बलुआ पत्थर है तथा हरा नीलापन लिये हुए है।

अष्टांगिक योग वास्तुशिल्प

समाधि प्रिय शिव का सानिध्य योग बल से संभव मान कर ज्यातिर्लिंग के मन्दिरों में पाणिनी के अष्टांगिक योग पर आधारित शिल्पकला का प्रयोग मन्दिर निर्माण में किया जाता था।

पांच पांच सोपान (सीढ़िया) यम एवं नियम की, नन्दी (आसन), पवनपुत्र (प्राणायाम), कछुआ (प्रत्याहार), गणेश (धारणा), माता पार्वती (ध्यान) भगवान शंकर (समाधिस्थ) उपरोक्त सभी इस मंदिर में विराजमान है तथा अष्टांगिक योग पर आधारित वास्तुकला की पुष्टि करते है। 1998 ई. में खुदाई पर मिली कश्यपावतार की समुद्र मंथन मूर्ति अष्टांगिक योग में प्रत्याहार का प्रतिनिधित्व करती है।

अखण्ड ज्योति एवं शिवरात्रि जागरण

वि. स. 1179 (सन् 1121) में मंडावर के राजा शिववीर चौहान ने इस मंदिर का जीर्णोद्वार कराया तथा अखण्ड ज्योति एवं शिवरात्रि जागरण एवं मेला आरंभ किया जो निर्बाध रूप से आजतक जारी है। सन् 1301 में रणथम्भौर (वि. सं. 1358) के युद्ध के पूर्व मंदिर का शिखर अलाउद्दीन खिलजी द्वारा तुड़वाया गया परन्तु रात को सुल्तान को डरावना सपना आया तो विध्वंस करने का विचार त्याग कर चल दिया।

शिलालेख एवं स्मारकों से

मंदिर के पाषाण स्तम्भों पर अंकित शिलालेख तथा गजनवी के आक्रमण में शहीद सेनापति रैवत जी का स्मारक इसके पुरातन होने की पुष्टि करते हैं।

धर्माचार्यों की सम्मति

कई विद्वान, धर्माचार्या, पुरातत्वविद, शोधार्थी इस स्थान की यात्रा कर चुके हैं तथा इसके वास्तविक घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग होने की पुष्टि कर चुके हैं।

अनन्तविभूषित जगदगुरू श्रीमद् शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्दजी सरस्वती, ज्यातिर्मठ
श्री नन्द नन्दनानन्दा सरस्वती, वाराणसी
श्री साम्ब दीक्षित दामोदर उपाध्याय, कर्नाटक
श्री महामण्डलेश्वर श्री कान्ताचार्यजी, बाराबंकी
ब्रह्मलीन स्वामी, कृष्णानन्दजी महाराज, जयपुर
श्री रतन अग्रवाल, तत्कालीन निदेशक पुरातत्व एवं संग्रहालय, जयपुर
महामण्डलेश्वर स्वामी रामानन्द सरस्वती, पुण्यतीर्थ, मौजी बाबा की गुफा कोटा (राज.)
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री अवधेश कुमाराचार्य (गागरोन पीठ) रामधाम, कोटा
आचार्य पीयूषजी महाराज, परम सन्त श्री गयाप्रसाद फाउन्डेशन ट्रस्ट, वृन्दावनधाम

कल्याण से (श्री कल्याण 55, 4 अप्रेल 81 गीताप्रेस गोरखपुर) द्वारा पं. पुरूषोत्तम शर्मा का घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग शिवाड़ पर आधारित लेख छापते हुए नीचे टिप्पणी दी है। ''इस लेख से दो देवगिरी पर्वत सिद्ध होते है। कल्याण के तीर्थांक एवं शिवपुराणांक में भी घुश्मेश्वर संबंधी चरण प्रकाशित हुए है, संभव है भ्रांतिवश लोगों द्वारा कर्नाटक स्थित प्रसिद्ध देवगिरि के समीपस्थ पहले घुश्मेश्वर की कल्पना की हो। यह शिवाडस्थ घुश्मेश्वर सत्य दीखता है। इस पर शंकराचार्य, आचार्यों तथा महात्माओं ने अपनी सम्मतियां दी है अत: यह लेख यहाँ भी प्रकाशित किया जा रहा है।''

श्री विश्वनाथ पाटिल सम्पादक कथालोक, सुभाष मार्ग, दिल्ली -6 से घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के बाबत पत्र व्यवहार करने पर उन्होंने घृष्णेश्वर -वेरूल की कथा भेजी जिसमें घृष्णा नामक रानी के पुत्र को मणकावति नामक सौत द्वारा अपहरण कर पर्वतों के पीछे झरने के पस जंगली हिंसक जानवरों का ग्रास बनने हेतु छिपाने एवं घृष्णा की भक्ति से प्रसन्न भगवान शंकर द्वारा रानी के पुत्र का पता बताने एवं आशीर्वाद देने की घटना का वर्णन है। उपरोक्त कथा शिव पुराण कोटिरूद्र संहिता के अध्याय 33 में वर्णित घुश्मा की कथा से साम्य नहीं रखती घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के शिवाड में ही स्थित होने के प्रमाणों से संतुष्ट होकर उन्होंने अपनी पत्रिका के दिसम्बर 1974 के अंत में पृष्ठ 65 से 67 तक में ज्ञातव्य शीर्षक से तथ्य परक लेख प्रकाशित किया।

ज्योतिर्लिंग के अद्‌भुत चमत्कार

घुश्मा के मृत पुत्र को जीवित किया

भक्तिमति घुश्मा के पुत्र को उसकी बहन सुदेहा ने सौतिया डाह के कारण टुकड़े-टुकड़े करके उसी सरोवर में फेंक दिया जिसमें घुश्मा प्रतिदिन एक सौ एक पार्थिव शिवलिंगों की पूजाकर विसर्जन करती थी। घुश्मा की अटूट भक्ति से प्रसन्न होकर आशुतोष शिव ने उसके मृत पुत्र को जीवित कर दिया तथा घुश्मेश्वर नाम से इस स्थान पर अवतरित हुए।

किशना एवं जानकी के पाषाण स्तम्भों की परिक्रमा आवश्यक

वि. स. 1177 में शिवाल ग्राम के किशना खाती की गाय जंगल में ज्योतिर्लिंग के ऊपर खड़ी हो जाती थी तो स्वत: उसके स्तनों में से दूध गिरने लगता था। किशना ने गाय का पीछा कर यह प्रत्यक्ष देखा परन्तु अज्ञानवश शिवलिंग पर कुठार से प्रहार किया तो खून का फव्वारा फूट पड़ा। किशना भय के मारे कुछ दूर तक भागा तो पाषाण का हो गया। गाय किशना की पत्नी जानकी को घटना स्थल पर लेकर आई जानकी ने प्रभु की स्तुति की तथा स्वयं भी आत्महत्या करनी चाही। भगवान ने किशना को पुन: शरीर देकर जानकी को आशीर्वाद दिया कि उनकी पूजा करने के बाद किशना-जानकी की परिक्रमा आवश्यक होगी।

ऋण मुक्तेश्वर की कथा

बणजारे द्वारा शिवरात्रि की रात्रि को उठाकर रखा गया देवगिरि का एक पत्थर सोने का हो गया। जिससे उसने ऋण मुक्तेश्वर मंदिर तथा ज्योतिर्लिंग का परकोटा बनवाया जिसके अवशेष अभी भी देखे जा सकते है।

जलहरी का चमत्कार

ज्योतिर्लिंग जलहरी में जलमग्न रहता है। कभी-कभी राष्ट्र पर संकट की स्थिति में इसका जलस्तर गिर जाता है। 1925 ई. में जलहरी के जलस्तर के गिरने पर मुसलमान कामदार द्वारा उपहास किये जाने पर ज्योतिर्लिंग के तत्कालीन पाराशर ब्राह्मण पुजारी श्री प्रताप द्वारा उसे चुनौती दी गई कि वह जलहरी को जलमग्न करके दिखाये। साधारण समय में पांच मटकों से लबालब जलहरी सात ड्रम जल से भी नही भर सकी। कामदार ने इस चमत्कार को देख कर तौबा की परन्तु उसे बहुत नुकसान उठाना पड़ा।

1966 में अश्रद्धा से करवाये गये सहस्रघटाभिषेक का जल मंदिर की सुदृढ़ता दीवारों से फव्वारों के रूप में बाहर आ गया। एक बूंद भी पानी नहीं रहा।

जलहरी का जल चमत्कारी है एवं असाध्य रोगों को दूर करता है। पीरू चाचा नामक तोपची मुस्लिम होते हुए भी मृत्युपर्यन्त प्रतिदिन ज्योतिर्लिंग का दर्शन करने आते थे तथा जलहरी का जल मांगकर सेवन करते थे क्योंकि पारे के सेवन से उत्पन्न दाह एवं सफेद दाग इस जल के सेवन से नष्ट प्राय: हो गये थे।

श्रृद्धालुओं की आस्था :

भारतवर्ष के कोने-कोने से यात्री अपनी वेदना, आशाओं को संजोये हुए इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने आते है तथा अपने समस्त कष्ट, पीड़ा, रोग इनको समर्पित कर अखण्ड आनन्द की अनुभूति करते है। जो घुश्मेश्वर नाम का उच्चारण भक्तिभाव से या अभक्ति से, क्रोध से, मोह से, दंभ से, भय से, या खिलवाड़ से भी करेगा, वह मोक्ष प्राप्त करेगा। ज्योतिर्लिंगों की पुष्पमाला में बाहरवां पुष्प घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग है जो शिवालय (शिवाड़) में विराजमान होकर हम पर अगाध प्रेम की वर्षा कर रहा है। उसकी कृपा हम सब पर बनी रहे। जय शिव शंकर, जय घुश्मेश्वर

आवागमन मार्ग

1. सवाई माधोपुर से जयपुर जाने वाली रेल्वे लाईन पर ईसरदा नामक स्टेशन से उतरकर बस-टैम्पू द्वारा शिवाड़

2. रेल सेवा - जयपुर से -

हनुमानगढ़-कोटा	-	प्रात: 5.40 पर
जयपुर-बयाना	-	प्रात: 6.40 पर
जोधपुर-सवाई माधोपुर-इन्दौर	-	प्रात: 10.40 पर
जोधपुर-भोपाल	-	सायं 5.35 पर
जयपुर-कोटा-श्यामगढ	-	रात्रि 11.25 पर

सवाई माधोपुर से -

कोटा-जयपुर	-	रात्रि 2.30 पर
भोपाल-कोटा-जोधपुर	-	प्रात: 5.30 पर
इन्दौर-सवाई माधोपुर-जोधपुर	-	दोपहर 2.40 पर
बयाना-जयपुर	-	सायं 4.55 पर
कोटा-जयपुर-हनुमानगढ़	-	सायं 6.40 बजे

3. बस सेवा - जिला मुख्यालय टोंक से शिवाड़ समय-समय पर नियमित बस सेवा व निवाई से शिवाड़ नियमित बस सेवा व निजी वाहन से निवाई - बरूनी - पराना होकर शिवाड़ पहुँचे । 20 कि.मी.

श्री घुश्मेश्वर द्वादशवां ज्योतिर्लिंग ट्रस्ट, शिवालय (शिवाड़)

शिवालय, शिवाड़ (राजस्थान) फोन : 07462-256136

website : www.ghushmeshwar.com

Printed by : PANKAJ ARTS # 9829184896